



गेहूं की प्रमाणित बीज किस्में

RAJ-1482, RAJ-3077, RAJ-3765, RAJ-4037, PBW-343, PBW-826,
PBW-502, DBW-303, DBW-187, DBW-222, DBW-327, WH-1270,
WH-711, WH-1402, HD-2851, HD-2967, HD-3086



खेत की तैयारी :- दो गहरी जुताई करके सुहागा लगाकर खेत को बीजाई के लिए तैयार करें।

बुवाई का समय :- गेहूं रबी की फसल है। गेहूं की बुवाई 25 अक्टूबर - 15 नवम्बर तक करें। पछेती बुवाई 25 नवम्बर से 15 दिसम्बर तक कर सकते हैं। समय की बुवाई के लिए 22°C तापमान उत्तम है।

बीज की मात्रा :- समय पर बुवाई हेतु 40 किग्रा प्रति एकड़ एवं पछेती बुवाई हेतु 50 किग्रा प्रति एकड़ बीज का प्रयोग करें। बीज की मात्रा भूमि के प्रकार पर भी निर्भर करती है।

बीज उपचार :- फफूंद जनित बीजों की रोकथाम के लिए बीजों को उपचारित करके ही बीजाई करनी चाहिये। बीज उपचार के लिए थायरम 75% wp की 2 ग्राम प्रति किलोग्राम या टेबुकोनाजोल 2% DS की 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

दूरी :- कतार से कतार की दूरी 20-23 सेमी रखें।

गहराई :- गहराई 5 सेमी. तक रखे इससे गहरी बिजाई न करें। पछेती बुवाई में गहराई 3-4 सेमी. ही रखें।

उर्वरकों की मात्रा एवं प्रयोग :- गेहूं की फसल में यूरिया की कुल मात्रा 75 किलो प्रति एकड़ की दर से देनी चाहिये जिसमें से 25 किलोग्राम प्रति एकड़ बुवाई से पूर्व एवं शेष यूरिया दो भागों में बांटकर पहली एवं दूसरी सिंचाई में दें। बुवाई के समय 50 किलोग्राम डीएपी प्रति एकड़ की दर से डालें।

सिंचाई :- गेहूं में सिंचाई मिट्टी के प्रकार पर निर्भर करती है गेहूं में मुख्यतः 5-6 सिंचाई की आवश्यकता होती है। फसल की सिंचाई अपने क्षेत्र की स्थिति एवं मौसम को ध्यान में रखकर करें।

खरपतवार नियंत्रण :- गेहूं में संकरी पत्ती वाले खरपतवारों (गुल्ली डंडा, जंगली जई आदि) की रोकथाम के लिए 500 ग्राम आइसोप्रोपेटॉरिन 75 प्रतिशत घु.पा. (एटीलोन, केलटोन, टोटास) या 160 ग्राम क्लोडिनोफोप (टॉपिक/पॉइंट) 15 प्रतिशत घु.पा. को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से बिजाई के 35-45 दिन बाद स्प्रे करें। चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार जैसे बथुआ, कटई, प्याजी व जंगली पालक आदि की रोकथाम के लिए मेटसल्फ्यूरोन (एल्ट्रिप) 8 ग्राम/एकड़ की दर से बिजाई के 30-35 दिन बाद छिड़काव करें।

कीट नियंत्रण :-

दीमक :- खड़ी फसल में दीमक की रोकथाम के लिये इमिडाक्लोप्रिड 17.8% एसएल दवा को 250-300 एमएल प्रति एकड़ अथवा बुवाई के समय क्लोरोपायरीफॉस 20% EC की 2.5 लीटर दवा को 500 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हैक्टेयर भूमि पर छिड़कें या 2.5 मिली प्रति लीटर पानी में छिड़काव करें।

चेपा/ माहू (Aphid) :- इमिडाक्लोप्रिड 17.8% SL 1 मिली प्रति 3 लीटर पानी में या थायोमेथोक्सम 25% WG, 0.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में छिड़काव करें।

थ्रिप्स (Thrips) :- डाइमेथोएट 30% EC, 2 मिली प्रति लीटर पानी में छिड़काव करें।

रोग नियंत्रण :-

पीला रतुआ :- गेहूं में पीला रतुआ रोग की रोकथाम के लिए 200 एमएल टेबुकोनाजोल या प्रोपिकोनाजोल को 200 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

करनाल बंट (Karnal Bunt) :- बुवाई से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम 2.5 ग्राम प्रति किग्रा बीज से उपचारित करें।

चूर्णी फफूंदी :- चूर्णी फफूंदी की रोकथाम के लिए 120 ग्राम नेटिवो 75 WG को 200 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

कटाई :- जब बालियाँ पूरी तरह पक जाएँ और दाने सख्त हो जाएँ, तब फसल की कटाई करें।

चेतावनी :- उपरोक्त सुझाई गई विधियाँ कम्पनी के अनुसंधान केन्द्रों पर लिए गए परीक्षणों पर आधारित हैं इसमें स्थान व पर्यावरण के अनुसार बदलाव संभव है। अच्छी फसल की प्राप्ति के सम्बन्ध में मार्गदर्शन के लिए निकटतम राज्य कृषि विश्वविद्यालय / कृषि विज्ञान केन्द्र / निकटवर्ती कृषि अधिकारी से सलाह लें।

निर्माता एवं विपणनकर्ता :

जय शंकर सीड्स प्रा. लि.

E-176, फेज फर्स्ट, रिको इण्डस्ट्रीयल एरिया
श्रीगंगानगर - 335002 (राजस्थान)